International Journal on Science and Technology (IJSAT)
E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

भारत -चीन के बीच नए भू-राजनीतिक समीकरण एवं इसके परीणाम

पारुल सोलंकी[1], प्रो. राजेन्द्र कुमार वैद्य[2]

[1]शोधार्थी
एम एल बी आर्ट्स एंड कामर्स कोलेज, ग्वालियर

सार
यह शोध परियोजना भारत और चीन के बीच जटिल संबंधों की पड़ताल करती है, तथा इसके ऐतिहासिक संदर्भ, भू-राजनीतिक प्रभावों और उभरते आर्थिक हितों पर ध्यान केंद्रित करती है। यह क्षेत्रीय विवादों, व्यापार असंतुलन और क्षेत्रीय प्रभाव जैसे प्रमुख मुद्दों की जांच करता है, जबकि कूटनीतिक संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे सहयोगों को स्वीकार करता है। अध्ययन भारत-चीन संबंधों को आकार देने वाले मुद्दों और क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक भू-राजनीति पर उनके संभावित प्रभावों की सूक्ष्म समझ प्रदान करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करता है। यह शोध एशियाई भू-राजनीतिक परिदृश्य की गहरी समझ में योगदान देता है, जो नीति निर्माताओं और विद्वानों के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। लेखक समाचार पत्रों, जर्नल लेखों, ऑनलाइन स्रोतों और अर्थशास्त्रियों की राय सहित द्वितीयक जानकारी का उपयोग करता है, और द्विपक्षीय व्यापार पर सीमा मुद्दे के दीर्घकालिक प्रभाव की भविष्यवाणी करता है। अध्ययन व्यापक एशियाई भू-राजनीतिक परिदृश्य की गहरी समझ में योगदान देता है।

कीवर्ड: भारत, चीन, सीमा विवाद, भू-राजनीतिक निहितार्थ

परिचय

भारत - चीन सम्बन्ध ; दो पड़ोसी एवं विश्व की दो उभरती शक्तियाँ हैं। दोनों के बीच लम्बी सीमारेखा है। परस्पर विवाद एवं संदेह के रहते तनाव भरे सम्बन्ध की पृष्टभूमि में दोनों देशों की रक्षा नीतियों का सिंगहोलक विषय में शोध के लिए अधिक तार्किक एवं प्रासंगिक है। वर्तमान में दोनों ही देश स्ट्रेटेजिक साझा के स्थान पर सामरिक शक्ति बढ़ाने में व्यस्त है । दोनों के बीच द्विपक्षीय मुद्दे विशेषता: सीमा विवाद,व्यापारिक प्रतिदीबंदता छेत्रों पर दावा और अपने अपने सीमावर्ता छेत्रीय अधो सरंचना निर्माण वाले मुद्दों पर मतभेद रखे हुए है ।

इन दोनों में प्रचीन काल से ही सांस्कृतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत से बौद्ध धर्म का प्रचार चीन की भूमि पर हुआ है। चीन के लोगों ने प्राचीन काल से ही बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत के विश्वविद्यालयों जैसे नालन्दा विश्वविद्यालय एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय को चुना था क्योंकि उस समय संसार में अपने तरह के यही दो विश्वविद्यालय शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। जबकी ऐसा कहा जाता है की इस तर्क वितर्क से दूर रहकर मेरा उदेश्य यहाँ अध्यन मध्यकाल की दृष्टि से उस काल में यूरोप के लोग अशिक्षित एवं असभ्य जंगली अवस्था में थे।

आधुनिक 1946 में चीन के साम्यवादी शासन की स्थापना के साथ सत्ता परिवर्तन हुआ तदपि दोनों देशों के बीच मैत्री सम्बन्ध बराबर बने रहे। वर्ष 1949 में नये चीन की स्थापना के बाद के अगले वर्ष, भारत ने न केवल मान्यता प्रदान की बल्कि चीन के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किये। भारत, चीन लोक गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर-समाजवादी देश था। १ अप्रैल १९५0 भारत पहला गैर सोसलिस्ट (समाजवादी) देश बना जिसने चीन के साथ स्थापित किये।

वर्ष 1954 के जून माह में चीन, भारत व म्यान्मार द्वारा शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धान्त यानी पंचशील का सिद्धांत परिवर्तन किया गया । पंचशील चीन व भारत द्वारा दुनिया की शान्ति व सुरक्षा में किया गया एक महत्वपूर्ण योगदान था, और आज तक दोनों देशों की जनता की जबान पर है। देशों के सम्बन्धों को लेकर स्थापित इन सिद्धान्तों की मुख्य विषयवस्तु है- एक-दूसरे की प्रभुसत्ता व प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान किया जाये, एक-दूसरे पर आक्रमण न किया जाये, एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न किया जाये और समानता व आपसी लाभ के आधार पर शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व बरकारार रखा जाये।

भारत की भू-राजनीतिक अवस्थिति

दक्षिण एशिया क्षेत्र में भारत लगभग केंद्र में स्थित है। भू-राजनीति स्थिति इस क्षेत्र में संबंधों को निर्धारित करती है भूमि, स्थान, भूभाग और अन्य भौगोलिक कारकों ने राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित किया है। किसी देश के भौगोलिक कारक राजनीतिक निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं। भारत के पड़ोसियों और राष्ट्र की सॉफ्ट और हार्ड पावर को समझने से इसके अन्य देशों के साथ संबंध रखने की आवश्यकता को समझने में मदद मिलेगी।

भारत, अपने विशाल और विविध परिदृश्य के साथ, सीमाओं के एक जटिल नेटवर्क के साथ सीमांकित है अत्यधिक भू-राजनीतिक महत्व है। ये सीमाएँ, चाहे भूमि बध्द हो या समुद्री, अपने पड़ोसियों और व्यापक अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ भारत के संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उत्तर में ऊंचे हिमालय से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर तक, भारत की सीमाएँ केवल नक्शे पर रेखाएँ नहीं हैं, बल्कि गतिशील क्षेत्र हैं जहाँ राजनीति, सांस्कृतिक, सुरक्षा और अर्थशास्त्र एक दूसरे से जुड़ते हैं।

इससे पहले कि हम पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों पर चर्चा करें, भू-राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अर्थ को समझना महत्वपूर्ण है। इसके लिए भारत के विशाल भौगोलिक और प्राकृतिक संसाधनों के बारे जानकारी होना आवश्यक है|

किसी देश का स्थान यह तय करता है कि उसे अपनी रक्षा के लिए सैनिकी रूप से कैसे तैयार रहना है। उदाहरण के लिए, ग्रेट ब्रिटेन ने अपने भू-राजनीतिक अवस्थिति का प्रभावी ढंग से उपयोग पड़ोसी और दूर के देशों के समुद्र पर नियंत्रण के माध्यम से उन्हे उपनिवेश बनाकर नियंत्रित करने के लिए किया।

भारत के मामले में भी भौगोलिक और प्राकृतिक संसाधनों ने इसकी शक्ति क्षमता और पड़ोसी और दूरदराज के देशों के साथ इसके संबंधों को निर्धारित करने के लिए इसकी शक्ति क्षमता का उपयोग कैसे किया जा सकता है, यह निर्धारित किया है। दूसरे शब्दों में, जैसे राजनीति शक्ति के अध्ययन के बारे में है, वैसे ही भू-राजनीति राष्ट्रों के बीच संबंधों पर भूगोल के प्रभावों को संदर्भित करती है।

1. भारत की शक्ति

सभी देशों के पास शक्ति के रूप में उपयोग किए जाने वाले संसाधन हैं। अंतर्राष्ट्रीय संबंध इस बारे में हैं कि एक देश दूसरे को अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए कैसे प्रभावित कर सकता है। किसी देश की शक्ति या ताकत को निम्न शब्दों में परिभाषित किया जाता है, हार्ड पावर और सॉफ्ट पावर। हार्ड पावर सैन्य शक्ति है और सॉफ्ट पावर अर्थव्यवस्था, संस्कृति आदि है।

नम्र शक्ति

सॉफ्ट पावर, किसी देश के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव का अन्य देशों पर प्रयोग है, ताकि हार्ड पावर का प्रयोग किए बिना उन्हें कुछ करने के लिए राजी किया जा सके।

भारत के पास सॉफ्ट पावर संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला है। देश अपनी सॉफ्ट पावर का इस्तेमाल करने के लिए उत्सुक है। सॉफ्ट पावर में योग, भारतीय संस्कृति और संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है।कला और शिल्प, संगीत और सामान्य रूप से संस्कृति। बॉलीवुड द्वारा निर्मित सिनेमा कई महाद्वीपों में लोकप्रिय हैं। भारत की क्रिकेट और हॉकी टीमें भी प्रसिद्ध हैं। संगीत से लेकर फुटबॉल और भोजन और विविधता तक इसकी विशाल विविधता ने पश्चिम को आकर्षित किया है। भारत के विदेश मंत्रालय का सॉफ्ट पावर का प्रयोग करने पर विशेष ध्यान है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) विभिन्न तरीकों से विदेशी संबंधों को मजबूत करने में एक प्रमुख भागीदार रहा है। पर्यटन मंत्रालय और अन्य सरकारी साझेदारभारत की सॉफ्ट पावर का प्रयोग करने के लिए समर्पित हैं।

भारत अपनी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संपदा को विदेशों में प्रदर्शित करता रहा है।विभिन्न माध्यमों से - प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से। अपने पड़ोस में, इसने मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के लिए विभिन्न अवसरों पर अपना समर्थन दिया है।

उदाहरण के लिए, 2015 में नेपाल में आए भीषण भूकंप के तुरंत बाद भारत के गृह मंत्रालय ने भारतीय सशस्त्र बलों और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल को वहां भेजा था।ऑपरेशन को "मैत्री" के नाम से जाना जाता था। भारतीय वायु सेना ने बचाव और राहत सामग्री वितरित करने के लिए उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर, एमआई-17 और अन्य विमानों का इस्तेमाल किया। भारत अफ़गानिस्तान को मानवीय और पुनर्निर्माण सहायता प्रदान करने वाला सबसे बड़ा क्षेत्रीय प्रदाता है।

कठोर शक्ति (हार्ड पावर)

कठोर शक्ति सैन्य और आर्थिक साधनों का उपयोग व्यवहार को प्रभावित करने के लिए है।अन्य राष्ट्रों या राजनीतिक संस्थाओं के हितों का हनन।

हार्ड पावर का अर्थ है सैन्य और आर्थिक साधनों का उपयोग करके दूसरे देशों के व्यवहार को अपनी इच्छानुसार प्रभावित करना और बदलना।

कठोर शक्ति अक्सर आक्रामक होती है और सबसे प्रभावी तब होती है जब एक राजनीतिक निकाय द्वारा किसी कमज़ोर राष्ट्र पर इसे थोपा जाता है। भारत ने कई लड़ाइयाँ सफलतापूर्वक जीती हैं और कई सैन्य अभियान चलाए हैं। 1961 में ऑपरेशन विजय में, भारत ने पुर्तगाल से गोवा, दमन और दीव को मुक्त कराया। 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के बाद, भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ़ लगभग 740 वर्ग मील क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया और 210 वर्ग मील क्षेत्र हासिल कर लिया।

1971 में भारत ने बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम का समर्थन किया था। भारतीय सेना ने लगभग 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों को बंदी बना लिया था। भारत ने ऑपरेशन मेघदूत के बाद सियाचिन ग्लेशियर में पाकिस्तान द्वारा किए गए अवैध अतिक्रमण को हटा दिया। भारतीय सेना ने देश के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सफलतापूर्वक सामान्य स्थिति बहाल की। 1988 में ऑपरेशन कैक्टस के तहत मालदीव में सरकारी शासन बहाल किया गया।

भारत में वर्तमान भू-राजनीतिक मुद्दे

वर्ष 2024 तक भारत में कुछ वर्तमान भू-राजनीतिक मुद्दे इस प्रकार हैं:

1. **सीमा विवाद** भारत को पाकिस्तान, चीन और नेपाल सहित पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद का सामना करना पड़ रहा है। पाकिस्तान के साथ नियंत्रण रेखा (एलओसी) और चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर तनाव चिंता का विषय बना हुआ है।

2. **क्षेत्रीय दावे** भारत के क्षेत्रीय दावे, विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के विवादित क्षेत्रों में, भू-राजनीतिक तनाव और अंतर्राष्ट्रीय जांच के अधीन हैं।

3. **क्षेत्रीय शक्ति गतिशीलता** दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के बढ़ते प्रभाव का क्षेत्रीय शक्ति गतिशीलता पर प्रभाव पड़ रहा है। क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए हुए है।

4. **आंतरिक सुरक्षा चुनौतियाँ** भारत को आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें उग्रवाद, आतंकवाद और सांप्रदायिक तनाव शामिल हैं, विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों और वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में।

5. **आर्थिक कूटनीति** प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ भारत की आर्थिक कूटनीति और व्यापार संबंध, साथ ही दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) और बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) जैसे क्षेत्रीय आर्थिक मंचों में इसकी भागीदारी, महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक कारक हैं।

6. **ऊर्जा सुरक्षा** भारत की बढ़ती ऊर्जा मांग तथा तेल और प्राकृतिक गैस के आयात पर निर्भरता को देखते हुए, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाना, भारत के लिए महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक विचार हैं।

भारत-चीन संबंध

भारत और चीन दुनिया की दो सबसे पुरानी सभ्यताएँ हैं, जिनमें लचीलापन का गुण है, जिसने उन्हें सदियों से और बाधाओं के बावजूद जीवित रहने और समृद्ध होने में सक्षम बनाया है। दोनों की एक लंबी, समृद्ध रणनीतिक परंपरा है। प्राचीन चीन और भारत के बीच राजनीतिक संपर्क बहुत कम और दूर-दूर तक थे। सांस्कृतिक क्षेत्र में, दोनों देशों के बीच संबंध बौद्ध धर्म के उद्भव से जुड़े हैं। हिंदू और बौद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव मध्य एशिया के माध्यम से चीन में फैल गए, और चीनी विद्वानों को नालंदा और तक्षशिला में भारतीय विश्वविद्यालयों में भेजा गया। हालाँकि, चीनी और भारतीय सभ्यताएँ ईसाई युग की पहली कुछ शताब्दियों के दौरान एक-दूसरे पर प्रतिक्रिया करती थीं, लेकिन धार्मिक-सांस्कृतिक संपर्क की प्रक्रिया लगभग दसवीं शताब्दी ई. के बाद बंद हो गई (भारत पर इस्लामी आक्रमणों के साथ)। तब से, दोनों देश एक हज़ार साल से अधिक समय तक ऐसे रहे जैसे कि वे एक-दूसरे के अस्तित्व से बेखबर हों, उन्नीसवीं सदी के आगमन तक, जब दोनों यूरोपीय शक्तियों के प्रभाव में आ गए। यह शोध कार्य शीत युद्ध के बाद के युग में विशेष रूप से 1991 से 2017 तक दोनों देशों के बीच राजनीतिक संबंधों के कायापलट पर केंद्रित है। इससे हमें दोनों देशों के बीच राजनीतिक रणनीतियों और संबंधों की समस्याओं, संभावनाओं और परिणामों को समझने में मदद मिल सकती है।

पहली शताब्दी ईस्वी से ही दोनों देशों के बीच भारत से चीन तक बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ व्यापक सांस्कृतिक संपर्क थे। दोनों देशों के बीच तिब्बत में हितों का टकराव था। 1949 में अपने गृहयुद्ध की समाप्ति पर चीन तिब्बत पर पुनः नियंत्रण स्थापित करना चाहता था और 1950 में हथियारों के प्रयोग से तिब्बती लोगों को लामावाद और सामंतवाद से मुक्त कराना चाहता था। चीन को नाराज करने से बचने के लिए नेहरू ने चीनी नेताओं को बताया कि भारत का तिब्बत में कोई राजनीतिक, क्षेत्रीय हित नहीं है या वह विशेष सिद्धांतों की तलाश नहीं करता है। भारतीय समर्थन से तिब्बती प्रतिनिधियों ने मई 1951 में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें चीनी संप्रभुता को मान्यता दी गई, यह मानते हुए कि तिब्बत में मौजूदा राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था जारी रहेगी। कोरियाई युद्ध (1950-53) को समाप्त करने में भारत के मध्यस्थता प्रयासों से दो एशियाई दिग्गजों के बीच सीधी बातचीत शुरू हुई दोनों देश राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सैन्य सहयोग सहित कई मुद्दों पर रचनात्मक बातचीत में लगे हुए हैं। दोनों सरकारों के बीच बहुत अधिक ठोस बातचीत है, प्रमुख मुद्दों पर एक-दूसरे की स्थिति की बहुत गहरी समझ है और साझा उद्देश्यों की बहुत अधिक स्वीकृति है। बढ़ते आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों के साथ, भौतिक संपर्क के साथ-साथ विचारों का अभूतपूर्व प्रवाह भी है। नई सदी की शुरुआत से, शांति और समृद्धि के लिए चीन-भारत रणनीतिक और सहकारी साझेदारी तेजी से बढ़ रही है। वर्ष 2011 चीन-भारत आदान-प्रदान का वर्ष था। 2.5 बिलियन की संयुक्त आबादी वाले दोनों राष्ट्र एक साथ आए और अपने मैत्री और सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम किया। एक-दूसरे की चिंता के प्रति संवेदनशीलता दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने का आधार बन गई है।

- **भू-राजनीतिक निहितार्थ**

भारत-चीन सीमा विवाद के महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक निहितार्थ हैं। 1967 के डोकलाम गतिरोध की तीव्रता को पार करते हुए गलवान सीमा संघर्ष ने सीमा पर 45 वर्षों में पहली भारतीय मौत को चिह्नित किया, जिससे उनके रिश्ते और खराब हो गए। भारत और चीन को विभाजित करने वाली वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) में सीमांकन का अभाव है, जिससे अक्सर सीमा विवाद होते रहते हैं। गलवान सेक्टर (पहले निर्विवाद), डेमचोक, पैंगोंग झील और सिक्किम में नाथू-ला में संघर्ष एक साथ शुरू हुआ। संघर्ष के लिए उकसाने वाला अभी भी स्पष्ट नहीं है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप दोनों पक्षों में हताहत हुए। जनवरी 2021 में, उपग्रह इमेजरी ने अरुणाचल प्रदेश में LAC के भारतीय

हिस्से के भीतर लगभग 2 किमी दूर एक नए गाँव के निर्माण का खुलासा किया, एक ऐसा क्षेत्र जिसे चीन भारत का हिस्सा मानने से इनकार करता है। सीमा पर चीनी आक्रामकता में वृद्धि के बारे में कई अटकलें लगाई जा रही हैं, जिसमें भारत द्वारा अनुच्छेद 370 को निरस्त करना, लद्दाख की स्थिति में बदलाव, अमेरिका-भारत संबंधों में सुधार और भारत और ताइवान के बीच संबंधों में गर्मजोशी शामिल है। सैन्य रूप से मजबूत शक्ति के रूप में चीन का लक्ष्य अपने प्रभुत्व का दावा करना है। इसके अलावा, चीन घरेलू मुद्दों के दौरान ध्यान भटकाने के लिए सीमा पर "जोखिम लेने वाला व्यवहार" प्रदर्शित करता है, जैसे कि COVID-19 महामारी से निपटने की आलोचना। जबकि चीन सीमा विवादों को आर्थिक संबंधों से अलग करना चाहता है, भारत संबंधों को सामान्य करने से पहले संघर्ष-पूर्व स्थिति पर लौटने पर जोर देता है। भारत ने PUBG, TikTok और Shein जैसे उनतालीस लोकप्रिय चीनी ऐप पर प्रतिबंध लगाकर जवाबी कार्रवाई की। इसके अतिरिक्त, भारत "आत्मनिर्भरता" पहल के माध्यम से चीन पर अपनी निर्भरता कम करने का प्रयास करता है।

- **सीमा विवाद चुनौतियां और द्विपक्षीय संबंध**

भारत और चीन, अपने लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवादों को सुलझाने के लिए कई कूटनीतिक पहल करने के बावजूद, लगातार चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। भारत के राजनीतिक और कानूनी समाधान खोजने के प्रयासों को सीमित सफलता मिली है, जो अंतरराष्ट्रीय कानून की अपर्याप्त समझ और उसके क्रियान्वयन से चिह्नित है। इस मामले पर चीन के रुख और संधि कानूनों की उसकी व्याख्या ने महत्वपूर्ण प्रगति की कमी में योगदान दिया है। सीमा विवाद को संबोधित करने के उद्देश्य से कई द्विपक्षीय समझौतों और प्रोटोकॉल के बावजूद, जैसे कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर शांति और सैन्य विश्वास-निर्माण उपायों से संबंधित, संघर्ष अभी भी अनसुलझा है।

कूटनीतिक माध्यमों से क्षेत्रीय विवादों को हल करने में निहित कठिनाइयाँ और जटिल वास्तविकताओं से निपटने में संधियों की संदिग्ध प्रभावशीलता, त्वरित समाधान की संभावना पर छाया डालती रहती है। सीमा विवादों का प्रभाव क्षेत्रीय दायरे से परे है, जो भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। महत्वपूर्ण आर्थिक विकास देखने और एक-दूसरे के प्रमुख व्यापारिक साझेदार बनने के बावजूद, 2020 में गलवान घाटी में हुई झड़प जैसी घटनाओं ने व्यापार संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है। घटना के बाद भारत में चीनी सामानों के बहिष्कार के आह्वान ने तनाव को रेखांकित किया। हालाँकि, व्यापार और निवेश उनके संबंधों के अभिन्न अंग बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों के समृद्ध इतिहास वाले दोनों देशों ने लोगों से लोगों के बीच बातचीत को बढ़ावा देने और आपसी समझ बढ़ाने के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम स्थापित किए हैं। जबकि सीमा विवादों का व्यापक द्विपक्षीय संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ा है, विभिन्न स्तरों पर चल रही बातचीत राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय मुद्दों को संबोधित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

निष्कर्ष

यह तर्क दिया जा सकता है कि भारत ने चीन के साथ बढ़ते शक्ति अंतर, एक तानाशाह शी के उदय, अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता के गहराने, चीन में राष्ट्रवाद की बढ़ती लहर और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में पुनर्संतुलन के प्रभाव को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया है। अगर उसने ऐसा किया भी है, तो भी उसने चीन से निपटने के लिए उचित रणनीतियों को पूरी तरह से स्पष्ट नहीं किया है। जबकि कूटनीति पर बहुत जोर दिया गया है, व्यापक शक्ति के गुणों को विकसित करने पर कम ध्यान दिया गया है। कठोर शक्ति - और केवल कूटनीति नहीं - चीन की चुनौती का जवाब है। गलवान

की घटना ने द्विपक्षीय संबंधों में संरचनात्मक समस्याओं को उजागर किया, चीन शासन की असली मंशा को उजागर किया और संबंधों को गहरे ठंडे बस्ते में डाल दिया। 2020 के झटके से जल्दी उबरने की संभावनाएं धूमिल लगती हैं

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, भारत की रक्षा तैयारियाँ पूरी तरह से रक्षात्मक हैं। भारत और चीन के बीच बहुत अच्छे राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध हैं, और सीमा पर किसी भी अप्रिय घटना से निपटने और किसी भी संघर्ष से बचने के लिए संस्थागत और संरचनात्मक व्यवस्थाएँ हैं। इस वर्ष जून में दोनों देशों के बीच रक्षा आदान-प्रदान की बहाली किसी भी तरह के तनाव से बचने के लिए दोनों देशों की उत्सुकता का प्रतीक है। बेहतर संबंधों के लिए दोनों देशों के सैन्य प्रतिष्ठानों के बीच विश्वास और भरोसा होना ज़रूरी है; क्योंकि आखिरकार, सुरक्षा सिर्फ़ रक्षा तैयारियों का सवाल नहीं है, बल्कि आपसी भरोसे और भरोसे का भी मामला है।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए कई पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों के कारण भारत के रक्षा आधुनिकीकरण की बाधाओं के लिए तैयारियों पर लगातार बहस चल रही है, देश के राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए पर्याप्त रक्षा तत्परता महत्वपूर्ण है। उच्च तकनीक वाले अभिनव जटिल हथियार बनाना और खरीदना यह सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है कि सशस्त्र बलों की मांग और आवश्यकताएं पूरी हों। इस अध्ययन के लिए भारत के रक्षा आधुनिकीकरण को एक केंद्रीय विषय के रूप में प्रस्तुत करते हुए, भारत के रक्षा आधुनिकीकरण के लिए पुश, पुल और बाध्यकारी कारक पर एक व्यापक विश्लेषण को दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता को उचित ठहराने वाले तर्कों के साथ समझाया गया है जो भारत को अंतर्राष्ट्रीय रक्षा व्यापार बाजार में एक अद्वितीय स्थान दिलाएंगे। लेकिन ऑफसेट क्लॉज को लागू करने के लिए नीति निर्माताओं से जुड़ी बाधाएं इस चिंता को और बढ़ाती हैं कि भारत आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए मिशन मोड पर रक्षा आधुनिकीकरण में कैसे पूंजी लगा सकता है।

संदर्भ

1. बैकस, मारिया (सितंबर 2002)। प्राचीन चीन। लोरेंज एजुकेशनल प्रेस, 2002. आईएसबीएन 978-0-7877-0557-2.
2. जेनिन, हंट (जनवरी 1999)। दूसरी सदी में भारत-जापान अफीम व्यापार। मैकफारलैंड, 1999। आईएसबीएन 978-0-7864-0715-6।
3. तानसेन सेन (जनवरी 2003)। बौद्ध धर्म, कूटनीति और व्यापार: चीन-भारत संबंधों का पुनर्गठन, 600-1400। हवाई विश्वविद्यालय प्रेस। आईएसबीएन 978-0-8248-2593-5।
4. विलियम्स, बारबरा (2005). द्वितीय विश्व युद्ध. ट्वेंटी-फर्स्ट सेंचुरी बुक्स, 2004. आईएसबीएन 978-0-8225-0138-1.
5. लैंकेस्टर, जॉन (12 अप्रैल 2005)। "भारत, चीन मिलकर 'विश्व व्यवस्था को नया आकार देने' की उम्मीद कर रहे हैं" वाशिंगटन पोस्ट। मूल से 9 फरवरी 2011 को संग्रहीत।
6. "भारत-चीन संबंध चीन-पाक से अधिक अनुकूल क्यों होंगे" Theworldreporter.com. 7 जुलाई 2010. मूल से 19 अक्टूबर 2010 को पुरालेखित.
7. भारत-चीन व्यापार लक्ष्य से आगे निकल गया संग्रहीत 10 मई 2013 को वेबैक मशीन, द हिंदू, 2 जनवरी 2010।
8. "अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना, चीन को पीछे छोड़ा" । एनडीटीवी । 29 मई 2022। मूल से 29 मई 2022 को संग्रहीत । 29 मई 2022 को लिया गया ।
9. जेफ एम. स्मिथ आज का वॉल स्ट्रीट जर्नल एशिया (24 जून 2009)। "चीन-भारत सीमा विवाद"। वॉल स्ट्रीट जर्नल। मूल से 10 जुलाई 2015 को संग्रहीत। 16 मई 2016 को पुनःप्राप्त।